✓ गद्यशिक्षणविधयः

उद्देश्यम् – ग्रहणम् अभिव्यक्तिश्च

अधिक उन्नत PDF एवं समर्पित कोर्स के लिए –

SKY EDUCARE ऐप डाउनलोड करें / Download Mobile App

Download

गद्य शिक्षण
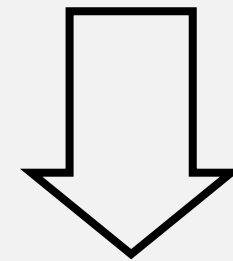
मनुष्य की सहज एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति का रूप गद्य है। लेकिन साधारण व्यवहार की भाषा गद्य तभी कही जा सकती है जब वह व्यवस्थित और स्पष्ट हो।

उद्देश्यम् – ग्रहणम् अभिव्यक्तिश्च

उद्देश्य -

- शुद्ध पदों का ज्ञान व उच्चारण ।
- नए नए शब्दों के प्रति आकर्षित करके छात्रों में अभिरुचि पैदा करना ।
- शब्द भंडारण व शक्तियों का ज्ञान प्रदान करना।
- भावाभिव्यक्ति तथा कल्पना शक्ति का वर्णन करना।
- विवेचनात्मक तथा समीक्षात्मक शक्ति का विकास।

गद्य शिक्षण की विधियाँ -

- ***विशेष** - गद्य शिक्षण की विधियाँ वस्तुतः काठिन्य निवारण की विधियाँ है अर्थात - गद्य शिक्षण की स्वतंत्र विधियां नहीं होती हैं। यहाँ शिक्षण के समय काठिन्य निवारण में जो विधियां काम में ली जाती हैं उन्हें ही गद्य शिक्षण की विधियां कहा जाता है।*
- ***अतः** गद्य शिक्षण की सर्वश्रेष्ठ विधि "काठिन्य निवारण विधि" है जिसे गद्य शिक्षण की आत्मा कहा जाता है।*

१. उद्बोधनविधि / अर्थबोधविधि

२. प्रवचनविधि / कथनविधि

३. स्पष्टीकरण विधि

४. प्रश्नोत्तर विधि/संवाद विधि/सुकराती विधि

५ व्याख्या विधि

१. उद्बोधनविधि / अर्थबोधविधि

✓ छात्रों के माध्यम से अर्थ निकलवाना उद्बोधन है।

✓ कठिन शब्दार्थ शिक्षक स्वयं नहीं बातकर विभिन्न दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग करते हुए छात्रों को उदबोधन देकर अर्थ निकलवाने के लिए छात्रों से प्रयत्न करवाता है।

❖ इस विधि में अध्यापक कठिन शब्दों के अर्थों को बताने के लिए अनेक साधनों का सहारा लेता है -

अ.चित्र-रेखाचित्र - मानचित्र आदि दिखा कर –
(महापुरुष, गणितीय आकृतियां, देश प्रदेशों के नाम)

ब. प्रतिकृति (मॉडल) दिखा कर-
(ज्वालामुखी, आपदा प्रबंधन, यातायात व्यवस्था)

स . प्रत्यक्ष अभिनय करके -
(हंसकर गाकर दौड़कर पढ़कर आदि क्रियाएं करके)

द .पदार्थ को प्रत्यक्ष दिखाकर -
(पुष्प, फल, पुस्तक, फर्नीचर आदि को दिखाकर)

२. प्रवचनविधि / कथनविधि

✓ *इस विधि में अध्यापक विभिन्न प्रविधियों के द्वारा काठिन्य निवारण करता है -*

१.अनुवाद विधि (प्राथमिक स्तर हेतु)

✓ *अध्यापक द्वारा संस्कृत के पदों का सरल मातृभाषा में अनुवाद करना।*

२.कोष विधि (उच्च स्तर हेतु)

✓ *पर्याय शब्दों द्वारा शब्दकोश का ज्ञान कराना।*

३. टीकाविधि

✓ *अध्यापक प्राचीन टिका तथा भाषाओं का प्रयोग करता है।*

✓ *प्राचीनतम विधि है।*

४. परिभाषा विधि

✓ *पारिभाषिक शब्दों को उदाहरण देकर समझाना।*

३. स्पष्टीकरण विधि

✓ *इस विधि में अध्यापक विभिन्न प्रविधियों के द्वारा पाठ में आए पदों को* ***स्पष्ट*** *करता है-*

१. व्युत्पत्ति के द्वारा

✓ *संधि, समास, प्रत्यय, उपसर्ग, संज्ञा पद, क्रियापद आदि की अलग-अलग व्युत्पत्ति कर के अर्थ को स्पष्ट किया जाता है। (उच्च स्तर हेतु)*

२. वाक्य प्रयोग के द्वारा

✓ *पाठ में आए कठिन पदों को किसी दूसरे सरल वाक्य प्रयोग करके अर्थ स्पष्ट किया जाता है ।*

३. तुलना के द्वारा

✓ *यह समानार्थक विलोम शब्द आदि के द्वारा तुलना की जाती है।*

४. उदाहरण

✓ **उदाहरण** *के माध्यम से भी काठिन्यनिवारण किया जाता है।*

४ प्रश्नोत्तर विधि/संवाद विधि/सुकराती विधि

- ✓ इसके प्रवर्तक सुकरात माने जाते हैं अतः इसे सुकराती विधि भी कहा जाता है ।
- ✓ शिक्षक विविध प्रश्नों के माध्यम से छात्रों से उत्तर प्राप्त करके पाठ के प्रवाह को आगे बढ़ाता है ।

5. व्याख्या विधि

- ✓ नए शब्द या वाक्यों की व्याख्या अध्यापक के द्वारा की जाती है।

गद्य पाठ योजना

1. पूर्व ज्ञान परीक्षण
2. प्रस्तावना
3. उद्देश्य कथन
4. प्रस्तुतिकरण
5. आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन
6. अशुद्धि संशोधन काठिन्य निवारण
7. बोद्ध प्रश्न
8. मौन वाचन
9. विचार विश्लेषणात्मक
10. सार कथन
11. पुनरावृति प्रश्न
12. गृह कार्य